# शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभाव

सुमन लता, मनोहर मेमोरियल शिक्षण महाविद्यालय, फतेहाबाद
suman29.gill@gmail.com

## सारांश

वर्तमान डिजिटल युग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण परिवर्तनकारी तकनीक के रूप में उभरकर सामने आई है। शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रयोग से पारंपरिक शिक्षण अधिगम प्रक्रिया अधिक प्रभावी, तकनीक–आधारित तथा छात्र–केंद्रित बनती जा रही है। यह तकनीक शिक्षण, अधिगम, मूल्यांकन और शैक्षिक प्रशासनकृसभी स्तरों पर व्यापक प्रभाव डाल रही है।

इस शोध पत्र का उद्देश्य शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रभाव, उसकी भूमिका, लाभ, नुकसान तथा भविष्य की संभावनाओं का विस्तृत अध्ययन करना है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित तकनीकों जैसे अनुकूली शिक्षण प्रणाली, बुद्धिमान मूल्यांकन प्रणाली, लर्निंग एनालिटिक्स तथा प्रशासनिक स्वचालन ने शिक्षा व्यवस्था को अधिक व्यवस्थित, पारदर्शी और परिणामोन्मुख बनाया है। इन तकनीकों के माध्यम से छात्रों को उनकी क्षमता, रुचि और सीखने की गति के अनुसार शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराई जाती है, जिससे अधिगम की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार होता है।

शिक्षकों के लिए भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता सहायक सिद्ध हुई है, क्योंकि इससे मूल्यांकन, रिकॉर्ड संधारण तथा अन्य प्रशासनिक कार्यों का बोझ कम हुआ है। परिणामस्वरूप शिक्षक शिक्षण, मार्गदर्शन और परामर्श पर अधिक ध्यान दे पा रहे हैं।

हालाँकि, शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रयोग से कुछ चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं, जैसे डेटा गोपनीयता, तकनीकी असमानता, नैतिक प्रश्न तथा छात्रों में तकनीक पर अत्यधिक निर्भरता। यह शोध पत्र माध्यमिक स्रोतों पर आधारित है और यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि यदि कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग संतुलित, नैतिक और मानव–केंद्रित दृष्टिकोण से किया जाए, तो यह शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने का एक प्रभावी माध्यम बन सकती है।